# फ्लैट स्क्रीन टी.वी. और पर्यावरण

आजकल फ्लैट स्क्रीन टी.वी. खूब लोकप्रिय हो रहा है। यह जगह बहुत कम घेरता है और बिजली भी कम खर्च करता है। इसके अलावा दावा तो यह भी किया जाता है कि इस पर तस्वीरें कहीं ज़्यादा साफ होती हैं। दरअसल ये टी.वी. लिक्विड क्रिस्टल डिस्प्ले (एल.सी.डी.) नामक टेक्नॉलॉजी पर आधारित हैं। मगर अब शोधकर्ता बता रहे हैं कि इन टी.वी. के उत्पादन के दौरान नाइट्रोजन ट्राई फ्लोराइड ($NF_3$) नाम की गैस वायुमंडल में छोड़ी जाती है जो कार्बन डाईऑक्साइड की अपेक्षा ज़्यादा ग्रीनहाउस प्रभाव उत्पन्न करती है। अनभिज्ञ लोगों के लिए बता दें कि ग्रीनहाउस प्रभाव हमारी धरती को गर्म करता है और आजकल चिंता का प्रमुख विषय है। ताज़ा आंकड़ों के मुताबिक वायुमंडल में $NF_3$ की जितनी मात्रा का अनुमान लगाया गया था, यह वास्तव में उससे चार गुना अधिक है।

शोधकर्ता चेतावनी देते रहे हैं कि एल.सी.डी. टी.वी. की लोकप्रियता के चलते भारी मात्रा में $NF_3$ वायुमंडल में छोड़ी जा रही है और यह कार्बन डाईऑक्साइड की अपेक्षा 17,000 गुना ज़्यादा प्रभावी ग्रीनहाउस गैस है। दिक्कत यह है कि इतनी खतरनाक होने के बावजूद $NF_3$ का नियमन क्योतो संधि के तहत नहीं किया जाता है। इसका कारण यह है कि 1997 में संधि तैयार करते समय वायुमंडल में $NF_3$ की मात्रा नगण्य थी और किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया था। विडंबना यह है कि उस समय परफ्लोरोकार्बन (पी.एफ.सी.) गैसें अत्यधिक खतरा पैदा कर रही थीं और $NF_3$ को उनके जलवायु-प्रेमी विकल्प के रूप में लाया गया था। आज हालत यह है कि यह स्वयं खतरा बन गई है।

स्क्रिप्स इंस्टीट्यूशन ऑफ ओशिएनोग्राफी के रे वाइस बताते हैं कि फिलहाल वायुमंडल में 5400 टन $NF_3$ मौजूद है जबकि 2006 में अनुमान लगाया गया था कि मात्र 1200 टन ही है। जियोफिज़िकल रिसर्च लेटर्स में प्रकाशित इन आंकड़ों का आशय यह है कि $NF_3$ को भी किसी नियमन के अधीन लाने की तत्काल ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***